आपका उपचार आपके घर

मानव शरीर के संचालन में शरीर में सप्त धातुओं की अहं भूमिका होती है। उनकी विकार मुक्त अवस्था एवं आवश्यक अनुपात का संतुलन ही अच्छा स्वास्थ्य कहलाता है। परन्तु हमारे गलत खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, अमर्यादित जीवन शैली के साथ-साथ खाने-पीने के शुद्ध पदार्थों की उपलब्धता न होना, प्रदूषित वातवारण, मनोरंजन के नाम पर काम विकार पैदा करने वाले भ्रामक विज्ञापनों, दवाईयों के अनावश्यक सेवन, शारीरिक श्रम का अभाव आदि कारणों से शरीर के ये अवयव विकारयुक्त हो जाते हैं। धातुओं के आवश्यक तत्त्वों में कमी अथवा वृद्धि होने लगती है। परिणाम स्वरूप शरीर में रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। स्वस्थ रहते हुये दीर्घायु जीवन जीना भी एक कला है, एक विज्ञान है, एक साधना है, एक शिक्षा है, जिसके लिये सम्यक् प्रयास आवश्यक है।

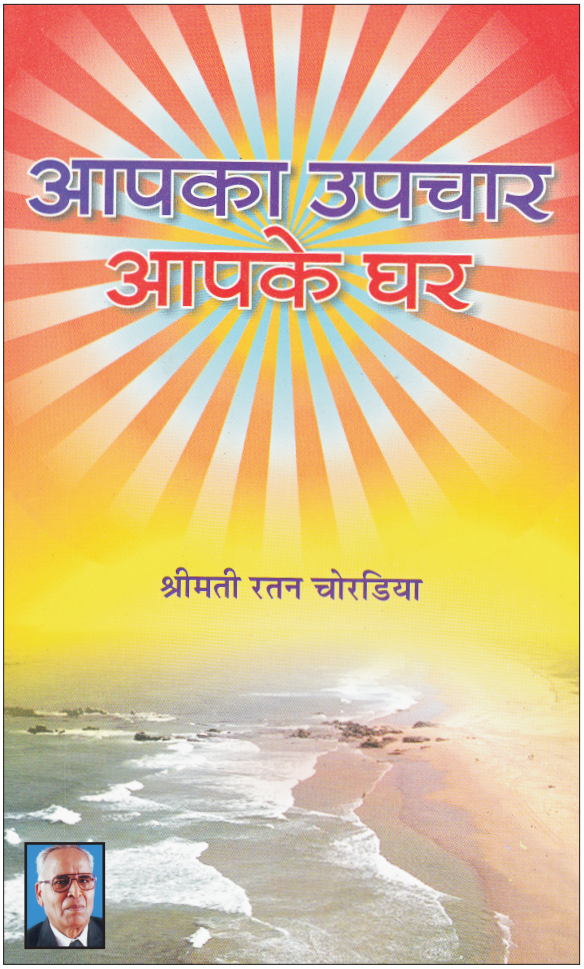

(सहयोग राशि- 25/- रुपये)

पुस्तक में चर्चित विधियों से धर में सहज उपलब्ध साधनों के अनुभूत प्रयोगों द्वारा उनमें पुनः संतुलन स्थापित कर रोगों से मुक्ति मिल सकती है।

पुस्तक के प्रथम भाग में कुछ प्रभावशाली स्वावलंबी निर्दोष चिकित्सा पद्धतियों का अति संक्षिप्त विवरण दिया है, जिसे रोगी स्वयं बिना किसी का सहयोग लिए कर सकता है। प्रत्येक चिकित्सा पद्धति बिना किसी दुष्प्रभाव अनेक असाध्य रोगों में अत्यधिक प्रभावशाली है। इस पुस्तक का उद्देश्य तो मात्र इतना ही है कि जो रोग साधारण घरेलू उपचार या खानपान से ठीक हो सकते हैं, उनके लिए पाठकगण व्यर्थ की भाग दौड़ से बचें।

- श्रीमती रतन चोरडिया

चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर,
थार हैण्डलुम के सामने, गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)
(फोन) : 0291-2621454,2632267(घर), 2435471
(फैक्स),094141-34606(मोबाइल)
E-Mail : cmchordia.jodhpur@gmail.com
swachikitsa@therapist.net